संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 67 ■ मई 2025

संस्थान को मिला मानद विश्वविद्यालय का दर्जा

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष और संस्थान के निदेशक का अभिनंदन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के क्षेत्रीय केंद्र, दिल्ली पर बुधवार, दिनांक 14 मई 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान को मानद विश्वविद्यालय की उपाधि मिलने के उपलक्ष्य में अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे द्वारा संस्थान परिवार को बधाई देने के साथ-साथ आगामी कार्यों हेतु प्रोत्साहित भी किया गया। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में संस्थान के प्रत्येक कार्मिक को बंधुत्व की भावना रखते हुए कार्य निर्वाह करने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने मानद विश्वविद्यालय होने पर आगामी योजनाओं के विषय में चर्चा की साथ ही सभी को विस्तृत रूप से नए डीपीआर से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि वर्षों से जिस उपाधि के लिए संस्थान प्रयासरत था, आज उसकी प्राप्ति हुई है जो खुशी का अवसर है, साथ ही अब संस्थान का दायित्व भी द्विगुणित हो गया है, जिसका निर्वाह हम सभी का ध्येय है। कार्यक्रम का संचालन प्रो. धनजी प्रसाद तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री साकेत बहुगुणा ने किया। ❑

केंद्रीय हिंदी संस्थान को मानद विश्वविद्यालय (डीम्ड यूनिवर्सिटी) का दर्जा मिल गया है। इसके बाद संस्थान में बड़े स्तर पर बदलाव आएँगे। संस्थान के द्वारा दी जा रही डिग्री की मान्यता विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से हो जाएगी। इसके साथ ही संस्थान अब नए पाठ्यक्रम (कोर्स) शुरू करने के लिए भी सक्षम होगा।

हिंदी संस्थान में देशी-विदेशी छात्र पढ़ने के लिए आते हैं। सबसे अधिक परेशानी गैर हिंदी भाषी छात्रों को यहाँ से पढ़ने जाने के बाद होती थी। क्योंकि विभिन्न स्तर पर उनको संस्थान से मिली डिग्री पर सवाल खड़े किए जाते थे। हालाँकि संस्थान शिक्षा मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संस्था है। अब संस्थान को बड़ी उपलब्धि मिल गयी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा मिल गया है। डीम्ड यूनिवर्सिटी बनने के बाद संस्थान विभिन्न स्नातक और परास्नातक के साथ-साथ शोध से जुड़े पाठ्यक्रम भी संचालित कर सकेगा। संस्थान से पढ़ने वाले देशी-विदेशी छात्रों को मिलने वाली डिग्री की मान्यता और स्वीकार्यता अब वैश्विक स्तर पर होगी।

संस्थान को डीम्ड यूनिवर्सिटी बनाने का विचार डेढ़ दशक पहले आया था। निवर्तमान उपाध्यक्ष प्रो. कमला प्रसाद ने सबसे पहले इस विचार को आगे बढ़ाया। उसके बाद निवर्तमान निदेशक प्रो. शंभूनाथ ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया। डीम्ड यूनिवर्सिटी की प्रक्रिया यूजीसी में संस्थान की तरफ से 2016 में शुरू की गयी। इसके बाद 2019 में मंत्रालय ने शपथपत्र माँगा। प्रक्रिया आगे बढ़ी और 2023 में विवि अनुदान आयोग ने संस्थान को लेटर ऑफ इंटेंट (एलओआई) जारी कर दिया। इसके बाद से ही प्रक्रिया निरंतर चल रही थी। यूजीसी ने एक्सपर्ट कमेटी ने 2023 में आवेदन की जाँच की। इसके बाद समिति ने कुछ शर्तों को पूरा करने के लिए केएचएस को आशय पत्र जारी करने की सिफारिश की। शिक्षा मंत्रालय ने केएचएस को डीम्ड यूनिवर्सिटी घोषित करने से पहले तीन साल की अवधि के भीतर शर्तों को पूरा करने के लिए आशय पत्र जारी किया। 10 दिसंबर 2024 को संस्थान ने शर्तों की अनुपालन रिपोर्ट प्रस्तुत की। रिपोर्ट. फिर से उसी एक्सपर्ट कमेटी के समक्ष रखी गयी। समिति ने संस्थान की अनुपालन रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया। पाँच मई को केंद्र सरकार ने संस्थान को डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा प्रदान करने के संबंध में नोटिफिकेशन जारी कर दिया। केंद्रीय हिंदी संस्थान को सालों की मेहनत का फल मिला है।

इस बीच दिनांक 08 मई, 2025 को प्रो. सुरेंद्र दुबे, माननीय उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल की उपस्थिति में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा को भारत सरकार द्वारा "विशिष्ट श्रेणी का मानद विश्वविद्यालय" का दर्जा होने के उपलक्ष्य में एक बधाई सभा रखी गई, जिसमें माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने बताया कि लंबे समय के प्रयत्नों के पश्चात अब केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा को भारत सरकार द्वारा ''विशिष्ट श्रेणी का मानद विश्वविद्यालय'' का दर्जा प्राप्त हुआ है। उक्त सभा में केंद्र के सभी शैक्षिक एवं प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे। अंत में मिष्ठान भी वितरित किया गया। संस्थान के मुख्यालय आगरा में भी मानद विश्वविद्यालय का दर्जा मिलने पर सभी शैक्षिणक प्रशासनिक एव अन्य कार्मिको में खुशी की लहर बनी रही। इस मौके पर संस्थान के निदेशक के नेतृत्व में भव्य कार्यक्रम आयोजित हुआ। मिष्ठान वितरित कर एक दूसरे को बधाई दी गई। ❑

इतिहास के आईने में संस्थान

यह है हिंदी संस्थान का इतिहास हिंदी को दुनिया तक पहुँचाने के लिए 19 मार्च, 1960 को केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल का गठन किया। भारत सरकार के तत्कालीन शिक्षा एवं समाज कल्याण मंत्रालय ने इसे एक स्वायत्तशासी संस्था के रूप में पंजीकृत कराया। सरकार द्वारा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल को अखिल भारतीय हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय को संचालित करने का पूर्ण दायित्व सौंपा गया। एक जनवरी 1963 को अखिल भारतीय हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय का नाम बदलकर केंद्रीय हिंदी शिक्षण महाविद्यालय कर दिया गया। इसके बाद 29 अक्टूबर 1963 को संपन्न परिषद की गोष्ठी में केंद्रीय हिंदी शिक्षण महाविद्यालय नाम भी बदलकर केंद्रीय हिंदी संस्थान कर दिया गया। केंद्रीय हिंदी सस्थान का मुख्यालय आगरा में है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के दिशा-निर्देशों के अनुसार हिंदी भाषा के अखिल भारतीय स्वरूप का विकास कराना और दिशा-निर्देशों के अनुसार हिंदी को अखिल भारतीय भाषा के रूप में विकसित करना संस्थान का मुख्य उद्देश्य है।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग

पाठ्य पुस्तक निर्माण कार्यशाला संपन्न

अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रमों की पाठ्य पुस्तक निर्माण हेतु समिति के सदस्यों की ऑफलाइन/ऑनलाइन एक दिवसीय कार्यशाला बैठक दिनांक 06.05.2025 को तथा विभाग में आयोजित की गई। इस बैठक में समिति के विभागीय शैक्षिक सदस्य डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा, डॉ. दीपामणि बरुवा, डॉ. परमान सिंह, डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय, डॉ. पुरुषोत्तम पाटिल, डॉ. रेणु चौधरी डॉ. अरविंद कुमार रावत, डॉ. शमा तथा दिल्ली केंद्र पर पदस्थ शैक्षिक सदस्य प्रो. योगेन्द्र कुमार, प्रो. अपर्णा सारस्वत, प्रो. धनजी प्रसाद, डॉ. ऋचा गुप्त, डॉ. शोभनीम, श्री साकेत बहुगुणा ने हिस्सा लिया। इस कार्यशाला में समिति के सदस्यों द्वारा इस संबंध में अनेक सुझाव दिए गए। यथा- 1. पाठावली की सामग्री में बदलाव हो यथा कहानियाँ। 2. पाठ्य पुस्तकों का स्तर सरल एवं स्तरानुरूप है। 3.पाठय सामग्री बहुत अधिक हो तो पाठ्य पुस्तक में कम से कम उतनी सामग्री दी जाए जितनी उनके द्वारा पढ़ा जाना और परीक्षा की दृष्टि से आवश्यक है। 4.व्याकरण आरंभिक स्तर से ही हो। 5.सभी पाठ्य पुस्तकें पूर्व के पाठ्यक्रम के अनुरूप ही हो। 6. अभ्यास में परिवर्तन किया जा सकता है। अभ्यास दक्षता आधारित हो जो वैश्विक मानकों के अनुरूप हो। 7. 300 के लेखन में प्रत्यय, उपसर्ग, समास आदि जोड़ा जा सकता है। लिखित एवं मौखिक में अपठित गद्यांश एक जैसे ही हों। 8.पहला प्रारूप एक बार सभी बना ले फिर उस पुनः चर्चा करें। 9. पाठ के नीचे तकनीकी आधारित बार कोड दिया जा सकता है जिनमें पाठ्यक्रम के अतिरिक्त सामग्री दी जा सकती है। 10.पाठ्य पुस्तकों में आईएसबीएन नंबर दिया जाए। सामग्री यूनिकोड में ही टंकित हो। ❑

दो दिवसीय लघु बजटीय संगोष्ठी

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ तथा काशी वाराणसी विरासत के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय लघु बजटीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। दिनांक 30 एवं 31 मई 2025 को भारत साहित्य एवं मीडिया महोत्सव के कार्यक्रम में कलकत्ता से प्रकाशित हिंदी के प्रथम समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड के 200 सौ साल पूरा होने के संदर्भ में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन असम के राज्यपाल महामहिम श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य ने किया। अपने उद्बोधन में महामहिम ने उदन्त मार्तण्ड के प्रकाशन को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि यह भाषिक प्रयोग भर नहीं था बल्कि भारतीय जनमानस की चेतना को जगाने का प्रयास था। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. राममोहन पाठक ने की। सत्र में डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी, आरके चौधरी, हरीप्रसाद कानोडिया, डॉ. अमिता दुबे, शरद कुमार त्रिपाठी, घनश्याम सुगला ने हिस्सा लिया।

हिंदी साहित्य के संवर्धन तथा विकास में हिंदी पत्रकारिता तथा संपादकों का अवदान विषयक सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने तथा संचालन हिमांशु उपाध्याय ने किया।

इस चर्चा सत्र में वरिष्ठ पत्रकार चंद्रभूषण सोच विचार के संपादक

देश का पहला हिंदी अखबार 'उदन्त मार्तण्ड' की 200वीं जयंती

नरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. किंशुक पाठक, ऋषिकेश राय, डॉ. रेशमी पांडा मुखर्जी, डॉ. दीक्षा गुप्ता, डॉ. दिव्या प्रसाद, डॉ. विवेक तिवारी, प्रो. अम्बरीश सक्सेना एवं पुरूषोत्तम तिवारी ने संबोधित किया।

समारोह के अंतिम दिन भाषायी पत्रकारिता तथा उसके अंतर्संबधों पर दो सत्र आयोजित हुए। डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र, अलीअहमद खान, डॉ. चन्दन कुमार गोस्वामी, डॉ. सुष्मिता बाला, डॉ. सौरभ गुप्ता, डॉ. अनुराधा गोस्वामी, डॉ. विनय कुमार सिन्हा ने भी अपने विचार रखे। समापन के पूर्व के सत्र की अध्यक्षता प्रो. अम्बरीश सक्सेना ने की। इस सत्र में प्रमोद कमल, पत्रकार जयप्रकाश मिश्र, डॉ. नाजी हातू, काकोटी बरुआ, अनुराग मिश्र, नूतन अग्रवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह के समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. शीतला प्रसाद दुबे ने की। इस सत्र की मुख्य अतिथि प्रो. सोमा बंद्योपाध्याय रहीं। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। ❑

जारी है मूल्यांकन तथा पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य

संस्थान द्वारा मुख्यालय आगरा एवं संबद्ध महाविद्यालय मिजोरम व दीमापुर पर संचालित हिंदी शिक्षण निष्णात एवं हिंदी शिक्षण पारंगत (द्वितीय वर्ष) एवं हिंदी शिक्षण प्रवीण (प्रथम एवं द्वितीय वर्ष), त्रिवर्षीय हिंदी शिक्षक डिप्लोमा (तृतीय वर्ष) तथा हिंदी कौशल डिप्लोमा (प्रथम वर्ष) पाठ्यक्रम सत्रः 2024-25 की वार्षिक परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं का केंद्रीय मूल्यांकन एवं संवीक्षा संस्थान के समिति कक्ष में दिनांक 06 मई 2025 से कार्य समाप्ति तक किया जा रहा है। इस कार्य के लिए अध्यापक शिक्षा विभाग के साथ संस्थान के अन्य विभाग के शैक्षिक सदस्य भी नामित किए गए है। वहीं, विभाग में पारंगत एवं निष्णात के सेमेस्टर प्रणाली के अंतर्गत तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के पाठ्यक्रम का निर्माण कार्य समाप्ति होने तक किया जा रहा है। ❑

योग पाठ्यक्रम के लिए ऑनलाइन बैठक

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में संचालित योग पाठ्यक्रम को सरल, वैज्ञानिक, रुचिकर तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी बनाने हेतु प्रो. जितेन्द्र सिंह, डीन एवं विभागाध्यक्ष, योग इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के साथ श्री अरविन्द कुमार शुक्ला, योग प्रशिक्षक (अनु.) की दिनांक 13 मई, 2025 को एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग में हिंदी भाषा दक्षता प्रमाण पत्र (बेसिक) पाठ्यक्रम के निर्माण को अंतिम रूप देने हेतु दिनांक 29.05.2025 को विभागीय शैक्षिक सदस्यों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। ❑

कज़ाक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के अधिकारियों के साथ बातचीत

स्थान के निदेशक महोदय सहित अन्य पदाधिकारियों (1.प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक 2.डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर, कुलसचिव 3. डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा, विभागाध्यक्ष) तथा अल-फराबी कजाक नेशनल यूनिवर्सिटी के पदाधिकारी के साथ एक ऑनलाइन बैठक दिनांक 16.05.2025 को आयोजित की गई। उक्त बैठक में श्रीमती नलिनी सिंघल, निदेशक स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, अस्टाना, कज़ाखस्तान भी ऑनलाइन माध्यम से जुड़ी। ❑

संस्थान की सम्मानित पत्रिका गवेषणा का कार्य प्रगति पर

के.हि.सं. गवेषणा', अंक-139, (जनवरी-मार्च, 2025) की फाइनल सामग्री को प्रूफ शोधन का कार्य किया जा रहा है। वहीं अंक-140, (अप्रैल-जून, 2025) के संकलित आलेखों में से प्रकाशन योग्य सामग्री का चयन कर लिया गया है। चयनित सामग्री को रिव्यू कमेटी को भेजा गया है। गवेषणा का संपादन कार्य प्रो. धनजी प्रसाद एवं सह-संपादन कार्य डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी द्वारा किया जा रहा है। ❑

कार्यशालाएँ आयोजित

अंगामी लोक साहित्य के सामग्री का संकलन, चयन, व्यवस्थापन, आदि के लिए प्रथम कार्यशाला दिनांक 02.05.2025 से 03.05.2025 तक अपने कार्य क्षेत्र 'कोहिमा नागालैण्ड में विद्वानों/ विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई है। इस कार्यशाला में डॉ. वित्योलेन्यो लिडिया जिवछा, डॉ. बृजेश कुमार, सहायक आचार्य हिंदी विभाग. नगालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा परिसर, डॉ. बी. पी. फिलिप, दीमापुर, नगालैंड, श्री जाकनी खोवूवे, ग्रामीण लोक परंपरा विशेषज्ञ झादीसा नगालैण्ड, श्रीमती निकदेर्योन्यो, मौखिक लोक कथाओं की संग्रहकर्ता एवं पारंपरिक ज्ञान विशेषज्ञ नागालैण्ड ने भाग लिया।

अवधी मुहावरा लोकोक्ति कोश द्वितीय कार्यशाला दिनांक 05.05.2025 से 10.05.2025 तक अपने कार्य क्षेत्र प्रयाग तीर्थम गेस्ट हाउस अरैल नैनी प्रयागराज में विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई । इस कार्यशाला में, प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल (संयोजक) श्री कृष्णा शंकर मिश्र, प्रयागराज (सदस्य) डॉ. सुरुचि मिश्र, विलासपुर (सदस्य) ने भाग लिया।

मराठी मुहावरा लोकोक्ति कोश निर्माण संबंधी द्वितीय कार्यशाला दिनांक 26.05.2025 से 29.05.2025 तक अपने कार्य क्षेत्र फर्ग्युसन महाविद्यालय, पुणे में विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला डॉ. पुरुषोत्तम कुंदे (हिंदी विशेषज्ञ), डॉ महेंद्र बालासाहेब ठाकूरदास, (मराठी विशेषज्ञ) गंगा शिल्प, निरंजन सोसायटी, कात्रज, पुणे, महाराष्ट्र प्रो. डॉ. आनंद काटिकर, पुणे, महाराष्ट्र, डॉ. संतोष धोत्रे, पुणे. महाराष्ट्र, प्रो. डॉ. पृथ्वीराज तौर (मराठी विशेषज्ञ) नांदेड़, महाराष्ट्र, प्रो. डॉ. विशाला शर्मा (हिंदी विशेषज्ञ) औरंगाबाद (छत्रपति संभाजी नगर) ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन सत्र में निदेशक महोदय डॉ. सुनील बाबुराव कुळकर्णी देशगव्हाणकर, ने कार्य को सुचारू रूप से सपन्न करने के लिए अपने सुझाव एवं मार्गदर्शन प्रदान किए। ❑

'समकालीन सामाजिक परिदृश्य में स्त्री सुरक्षा के बरक्स पुरुषों की स्थिति'

विभाग में पदस्थ शैक्षिक सदस्य डॉ. पुरुषोत्तम पाटील, सहायक आचार्य (हिंदी साहित्य) को दिनांक 14 मई, 2025 को केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली द्वारा आयोजित परिचर्चा में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। 'समकालीन सामाजिक परिदृश्य में स्त्री सुरक्षा के बरक्स पुरुषों की स्थिति' विषय पर आधारित इस परिचर्चा में डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने समकालीन आधुनिक परिस्थितियों में पुरुषों के जीवन के बदलते पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा प्रतिपादित किया कि पुरुषों के जीवन यापन को भी एक नये दृष्टिकोण से देखने समझने की आवश्यकता है। इस परिचर्चा की अध्यक्षता निदेशालय के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ हिंदी लेखिका श्रीमती नासिरा शर्मा उपस्थित रहीं। ❑

संपादकीय

गतिमान है काल का पहिया

कालचक्र सतत गतिशील है। 16 मई 2023 को मैंने केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण किया था। अनोखी गति वाले समय के साथ कदम ताल करते हुए संख्या लिहाज से दो साल गुजर गए। इन दो वर्षों में संस्थान समाचार मासिक के सफल 24 अंक प्रकाशित हुए। यह 25 वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है जिसे हम प्रचलित बोलचाल की भाषा में 'सिल्वर जुबली अंक' भी कह सकते हैं। पिछले 24 अंकों का पूरा होना उतना महत्वपूर्ण नहीं जितना कि इसके होने के एहसास का बने रहना है। हम इसी एहसास को अनवरत आगे बढ़ाए रखने की प्रक्रिया में सतत गतिशील हैं, ताकि हमारे सुधी पाठकों को हर बार इसे छूने की, खोलकर देखने-पढ़ने की और इसमें शामिल सूचना सुगंध से सराबोर होते हुए खुद को अद्यतन करने की कामना बनी रहे, नित्य प्रति आगे बढ़ती रहे, क्योंकि 43 माह पूर्व संस्थान समाचार के पुनर्प्रकाशन की परिकल्पना इसी नेक विचार को केंद्र में रखकर की गई थी। संस्थान समाचार, संस्थान के मुख्यालय आगरा सहित इसके सभी आठ क्षेत्रीय केंद्रों की लगातार बढ़ती शैक्षणिक व प्रशासनिक गतिविधियों का सूचक है, नित्य प्रति के कार्यकलापों का आईना है तथा इससे भी बढ़कर समय की शिला पर दर्ज हो रही उपलब्धियों का जीवंत दस्तावेज भी है। यह न केवल सूचनाओं के प्रचार प्रसार का तंत्र है बल्कि स्वयं के आकलन का एक बड़ा जरिया भी है।क्या खोया, क्या पाया की तर्ज पर क्या किया और क्या करना बाकी है की सूची बरबस आँखों के आगे आ जाती है। खुद को भरोसा हो जाता है कि क्या लक्ष्य लेकर चले थे और कितने पूरे कर लिए तथा कितना शेष रह गया है।

गौरव की बात है कि इसी कालखंड में संस्थान के पूर्वजों के पुण्य तथा संस्थान को और अधिक ऊँचाई पर ले जाने की प्रतिबद्धता के साथ जुड़े वर्तमान प्रशासनिक एवं शैक्षणिक सदस्यों के पवित्र प्रयास से केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने संस्थान को विशिष्ट मानद विश्वविद्यालय का दर्जा प्रदान किया है। संस्थान के संस्थापक पद्म श्री मोटूरी सत्यनारायण ने जिन मूल्यों और आदर्शों के साथ संस्थान को बृहद भाषा केंद्र के रूप में विकसित होने का सपना रोपा था यह उसका फलीभूत होना है।

मोटे तौर पर याद करूँ तो इन दो वर्षों में एक अंतराल के साथ विदेशी साहित्यकारों का आना-जाना, हिंदी भाषा के वैश्विक प्रसार के लिए गंभीर बहस परिचर्चाएँ, संस्थान के क्षेत्रीय केंद्रो द्वारा हिंदी अध्यापकों, हिंदी प्रेमियों को शिक्षित-प्रशिक्षित करने के लिए अनेक नवीकरण कार्यक्रमों, साहित्य और भाषा की दृष्टि से समसामयिक विषयों पर अनेक राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आदि आयोजित हुईं। संस्थान द्वारा प्रकाशित नियमित पत्रिकाओं, पुस्तकों के लोकार्पण हुए। विदेशी विद्यार्थियों को भारत की संस्कृति और भारतीय मूल्यों से परिचित कराने के लिए शैक्षिक पर्यटन के कार्यक्रम संपन्न हुए। नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप विद्यालयी शिक्षा में परिवर्तन लाने तथा शैक्षिक एवं भाषा सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने, विभिन्न विषयों पर कोश तैयार करने, लोक साहित्य को बढ़ावा देने, अध्येता कोश तैयार करने, विद्यार्थियों में कौशल प्रबंधन के गुण विकसित करने, पाठ्यक्रम के साथ-साथ स्वास्थ्य, तकनीकी और चरित्र विकास करने, संस्थान द्वारा प्रकाशित सामग्री ऑनलाइन उपलब्ध कराने, नए-नए पाठ्यक्रम प्रारंभ कर शिक्षण के साथ-साथ प्रशिक्षण पर जोर देने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए राष्ट्र प्रेम एवं राष्ट्रभक्ति के समन्वित संस्कार से छात्रों को जोड़ा गया। संस्थान के सुविज्ञ आचार्यों से शिक्षित-प्रशिक्षित होकर अनेक छात्र दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भाषाई राजदूत का काम कर रहे हैं। संस्थान द्वारा शुरू किए गए स्पोकन हिंदी पाठ्यक्रम का लाभ विभिन्न देशों के दूतावासों के कार्मिकों को मिला है। इस क्रम में संस्थान द्वारा तैयार 'भाषा संगम योजना' उत्तर दक्षिण को जोड़ने में भाषाई सेतु का काम करने वाली है। इससे नई शिक्षा नीति 2020 में शामिल त्रिभाषा सूत्र को जमीन पर उतारने में मदद मिलेगी, वहीं राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रबोध को भी बल मिलेगा।

समय निरंतर आगे बढ़ रहा है। मुझे एक पुराने कवि विद्यापति की याद आ रही है। विद्यापति की स्मृतियों में माटी की गंध थी तो नए बदलते समाज के सुंदर सपने भी थे। उन्होंने अपने वक्त में अपने वक्त को अपनी तरह से याद किया। बचपन में विद्यापति पर आलस्य और प्रमाद की छाया थी। विद्यापति की माँ हंसिनी देवी ने अँगीठी का अलाव तापते हुए उनसे कुछ अनुभव की बातें कहीं थीं, उन बातों को हम चबूतरे के सच की तरह बाँटते हैं। बकौल विद्यापति, मेरी माँ ने जो कहा वह इस प्रकार है। 'मनुष्य कितना ही परिश्रमी क्यों ना हो यदि वह अपने परिश्रम के साथ समय का सामंजस्य नहीं करेगा तो उसका श्रम निष्फल चला जाएगा अथवा अपेक्षित फल न ला सकेगा। जैसे असमय बोया हुआ बीज बेकार हो जाता है, समय पर ना काटी गई फसल नष्ट हो जाती है। प्रकृति का प्रत्येक कार्य समय पर होता है। समय पर ग्रीष्म तपता है, पानी बरसता है, शीत आती है। चांद सूरज ग्रह नक्षत्र सब समय पर उदय अस्त होते समयानुसार अपनी परिधि में परिभ्रमण करते हैं। इनकी सामायिकता में जरा सा व्यवधान पड़ने से सृष्टि में उपद्रव खड़े हो जाते हैं।' बताते हैं की विद्यापति के जीवन में बदलाव आया। वे संस्कृत, अवहट्ट और मैथिली के प्रकांड पंडित हुए।

धैर्य, जोश, होश, हिम्मत, शांति, शालीनता और विनम्रता तथा समय के तीव्र वेग के साथ तालमेल बैठाकर लक्ष्य का संधान किया जाए तो सफलता अवश्य मिलती है। समय शिक्षक भी है समय परीक्षक भी है। ज्ञान आँख है और कर्म पाँव। समय के साथ हमें देखते हुए पैर बढ़ाते जाना है। अगर जयशंकर प्रसाद के शब्दों में कहें तो 'इस पथ का उद्देश्य न हो श्रांत भवन में जा टिकना, चलते जाना उसे सीमा तक जिसके आगे राह न हो।' और जब यह भाव पैदा होगा तो निश्चित रूप से संस्थान और भी नए और बड़े मुकाम हासिल करेगा। यही मेरी कामना भी है।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक

भाषायी सेतु का काम करेगी 'भाषा संगम योजना' : निदेशक

नई शिक्षानीति 2020 के अंतर्गत त्रिभाषा सूत्र के सफल क्रियान्वयन को और अधिक गति देने की गरज से केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा द्वारा 'भाषा संगम योजना' तैयार की गई है। इस योजना को शीघ्रातिशीघ्र अम्लीजामा पहनाने के लिए द्रुत गति से कार्य किया जा रहा है। इस बहुआकांक्षीय योजना के जरिए दक्षिण भारत के भाषा प्रचारक उत्तर भारत में आकर दक्षिण की भाषाएँ तथा उत्तर भारत के भाषा प्रचारक दक्षिण में जाकर हिंदी का प्रचार-प्रसार करेंगे। भाषा संगम योजना उत्तर और दक्षिण को जोड़ने में भाषायी सेतु का काम करेगी। उक्त जानकारी केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने संस्थान के हैदराबाद केंद्र द्वारा आयोजित नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह के दौरान अपनी बात रखते हुए दी। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा तैयार भाषा संगम परियोजना से भारतीय भाषाओं का प्रचार-प्रसार बढ़ेगा ही भाषायी समृद्धि के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता के तत्वों को भी पुख्ता आधार प्राप्त होगा।

मालूम हो कि केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद तथा चेन्नई हिंदी प्रचारक संघ द्वारा चेन्नई के हिंदी प्रचारक/हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए 5 से 17 मई तक '483 वें नवीकरण पाठ्यक्रम' का आयोजन गुरुनानक महाविद्यालय, वेलेचेरी, चेन्नई में किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन समारोह 05 मई, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई के कुलसचिव (प्रभारी) डॉ. मंजुनाथ अंबिग, विशिष्ट अतिथि के रूप में गुरुनानक महाविद्यालय, चेन्नई के उप प्राचार्य डॉ. पी. वी. कुमारगुरु, सम्मानित अतिथि के रूप में भक्तवत्सलम विद्याश्रम, कोत्तूर, चेन्नई की प्राचार्या डॉ.

483वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

विजयालक्ष्मी एन. तथा विशेष अथिति के रूप में चेन्नई हिंदी प्रचारक संघ के महासचिव जे. अशोक कुमार जैन, गुरुनानक महाविद्यालय वेलेचेरी की डीन (अकादमिक) डॉ. स्वाति पालीवाल उपस्थित थे।

इस नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन समारोह 17 मई 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. बी. एल. आच्छा, विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व प्राचार्य डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन, गुरुनानक महाविद्यालय, चेन्नई के उप प्राचार्य डॉ. पी. वी. कुमारगुरु, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा चेन्नई की कुलसचिव डॉ. पी. राधिका तथा अन्य अथिति के रूप में चेन्नई हिंदी प्रचारक संघ के महासचिव श्री अशोक कुमार जैन, गुरुनानक महाविद्यालय, वेलचेरी की डीन, अकादमी डॉ. स्वाति पालीवाल उपस्थित रहे थे। इस पाठ्यक्रम का समापन 17 मई 2025 को निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। ❑

नया युग प्रादेशिक भाषाओं का होगा : प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि यह नया युग प्रादेशिक भाषाओं का युग है। इसके लिए नई शिक्षा नीति में भी त्रिभाषा का समावेश किया गया है। सभी भाषाएँ सामानांतर हैं पर उनका दिल या मन समुद्र की तरह है। इसका विकास करना हम सब का कर्तव्य है। वैश्विक स्तर पर भी सभी कंपनियाँ हिंदी में प्रचार-प्रसार कर रही हैं। हमारे देश के प्रधानमंत्री भी हिंदी भाषा का विकास चाहते हैं। आजकल की टेक्नोलॉजी में मोबाइल सभी प्रदेशिक भाषाओं में अपनी सॉफ्टवेयर डेवलप कर चुका है जिससे भाषाओं के अनुवाद में सरलता हो गई है। भाषा नए-नए रोजगार देने में सक्षम है तथा इससे मनुष्य के कौशल एवं समाजिक विकास होता है।

उक्त बातें केंद्रीय हिंदी संस्थान, के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहीं। मौका था हैदराबाद केंद्र द्वारा तमिलनाडु राज्य के ईरोड जिले के हिंदी प्रेमी मंडल के प्रचारक हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए 19.05.2025 से 29.05.2025 तक '484 वें नवीकरण पाठ्यक्रम' के आयोजन का। हैदराबाद के ललिता नर्सरी एवं प्राइमरी स्कूल, थिलाईनगर, ईरोड में संपन्न कार्यक्रम की अध्यक्ष केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने

484वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

की। मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, त्रिची, तमिलनाडु के सचिव, काँवे, हिंदी प्रेमी मंडल के कार्य का सदस्य श्री वी. सुंदरनाथन उपस्थित थे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक एवं डॉ. दीपेश व्यास मंच पर उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री सुंदर नाथन ने कहा कि आप सभी प्रतिभागियों को इसका लाभ प्रतिदिन उपस्थित होकर लेना चाहिए। अपनी व्याकरण संबंधी एवं जितनी भी कठिनाइयाँ आपको पढ़ने में, लिखने में होती हैं। उन सभी का निवारण होगा। इस आशा के साथ आप प्रतिदिन अपनी उपस्थिति दर्ज कराएँ।

कार्यक्रम के अध्यक्ष सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि इस कार्यशाला में इतनी महिलाओं की संख्या देखकर उन्हें बहुत खुशी हो रही है तथा आशा है कि प्रतिभागियों की जितनी भी जिज्ञासाएँ हैं संस्थान के अध्यापक निश्चय ही उनका समाधान करेंगे।

क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे ने कहा कि हमें पूरी आशा है कि इस कार्यशाला से आपको बोलने एवं लिखने में जितनी भी कठिनाइयाँ हो रहीं हैं उन सभी कठिनाइयों को दूर करने का हम भरसक प्रयास करेंगे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. फत्ताराम नायक ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दीपेश व्यास ने किया। संस्थान के साथी शेख मस्तान द्वारा सभी प्रतिभागियों का नामांकन एवं पंजीकरण किया।

इस नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन समारोह 29 मई, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निर्देशक पो, सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, चेन्नई के कार्यकारी सदस्य डॉ. आर. जयकरण, विशिष्ट अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, त्रिची, तमिलनाडु के कार्यकारी सदस्य डॉ. ए. आर. चंद्रशेखरन, तथा अन्य अथिति श्री वी. सुंदरनाथन एवं हिंदी प्रेमी मंडल, इरोड की प्रभारी श्रीमती देवलक्ष्मी उपस्थित थे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निर्देशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक एवं डॉ दीपेश व्यास मंच पर उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम का संचालन एस. स्वर्णाम्बिगै द्वारा किया गया। आभार एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रतिभागी समूह द्वारा प्रस्तुत किया गया। अंत में राष्ट्रगान से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस 484 वें नवीकरण पाठ्यक्रम में कुल 112 (महिला 103, पुरुष-09) माध्यमिक विद्यालय के हिंदी शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। ❑

"समन्वय दक्षिण" का लोकार्पण

483वें नवीकरण पाठ्यक्रम के उद्घाटन समारोह के अवसर पर संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका 'समन्वय दक्षिण' का लोकार्पण करते मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई के कुलसचिव (प्रभारी) डॉ. मंजुनाथ अंबिग।

इस अवसर पर मंच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि गुरुनानक महाविद्यालय, चेन्नई के उप प्राचार्य डॉ. पी. वी. कुमारगुरु, सम्मानित अतिथि के रूप में भक्तवत्सलम विद्याश्रम, कोतूर, चेन्नई की प्राचार्या डॉ. विजयालक्ष्मी एन. तथा विशेष अथिति के रूप में चेन्नई हिंदी प्रचारक संघ के महासचिव जे. अशोक कुमार जैन, गुरुनानक महाविद्यालय वेलेचेरी की डीन (अकादमिक) डॉ. स्वाति पालीवाल, पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. फत्ताराम नायक एवं डॉ. दीपेश व्यास मंच पर उपस्थित रहे। उसके बाद साथ ही डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन द्वारा अनूदित पुस्तक 'महाभारत' का लोकार्पण किया गया।

प्रवेश परीक्षा

दिनांक 31.05.2025 (शनिवार) को हैदराबाद केंद्र पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा संचालित निष्णात, पारंगत तथा प्रवीण की प्रवेश परीक्षा क्षेत्रीय निदेशक एवं परीक्षा अधीक्षक प्रो. गंगाधर वानोडे के संयोजन में संपन्न की गई। केंद्र पर आयोजित प्रवेश परीक्षा के लिए कुल 16 विद्यार्थी उपस्थित हुए, जिसमें प्रवीण, 01, पारंगत 13 तथा निष्णात-02 शामिल है। वीक्षक का कार्य एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. फत्ताराम नायक ने किया। इस अवसर पर केंद्र के सभी सदस्य उपस्थित थे। ❑

प्रकाशन विभाग

483वें में नवीकरण पाठ्यक्रम में प्रतिभागियों को हैदराबाद केंद्र के प्रकाशन विभाग से 195 पुस्तकें 25 प्रतिशत छूट के साथ बेची गई। वहीं 484वें नवीकरण कार्यक्रम के दौरान प्रकाशन विभाग द्वारा 25 प्रतिशत छूट के साथ 368 पुस्तकों की बिक्री हुई। इस दौरान 118 सदस्यों ने समन्वय दक्षिण पत्रिका की सदस्यता ली। ❑

देवनागरी में हो स्थानीय भाषाओं के साहित्य का संकलन : प्रो. सुरेन्द्र दुबे

185वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम का समापन समारोह

केंद्रीय हिंदी शिक्षण मण्डल आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने कहा है कि पूर्वोत्तर और मिजोरम की सभी भाषाएँ सम्मानित और महत्वपूर्ण हैं। देश की अन्य भाषाओं के तरह इनके भी संरक्षण एवं सर्वधन के लिए और अधिक सार्थक प्रयास किए जाने चाहिए। लेकिन हमें स्मरण रखना चाहिए कि हिंदी के माध्यम से केवल भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर भाषा के मामले में फलने फूलने के अनेक अवसर निर्मित होते हैं। प्रो. दुबे ने यह भी कहा कि स्थानीय भाषाओं के लोकसाहित्य, लोकगीत, लोककथाओं आदि का देवनागरी लिपि के माध्यम से संकलन किया जाना चाहिए।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के शिलांग क्षेत्रीय केंद्र द्वारा आयोजित नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह के दौरान अपनी बात रखते हुए मंडल के उपाध्यक्ष ने कहा कि पूर्वोत्तर की सभी भाषाएँ भारतीय भाषायी समृद्धि के लिए अनमोल हैं। यहाँ कि भाषाओं का स्वरूप और संस्कार न सिर्फ सम्मानित है बल्कि महत्वपूर्ण भी है। उन्होंने कहा कि दुनिया आज वैश्विक गाँव में तब्दील हो गई है। हिंदी विश्व के स्तर पर लगातार बढ़ रही है। ऐसे में भारतीय भाषाओं से जुड़े लोकसाहित्य का संकलन मानक देवनागरी लिपि में किया जाना चाहिए। ताकि इनकी पहुँच अधिकाधिक क्षेत्रों तक आसानी से हो सके।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र, शिलांग द्वारा मिज़ोरम राज्य के आइजोल जिले के स्कूल हिंदी शिक्षकों के लिए 185वाँ हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम दिनांक 05.05.2025 से 17.05.2025 तक मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय, दुर्तलांग नॉर्थ, आइजोल, मिजोरम में आयोजित किया गया। इस पाठ्यक्रम के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय थे तथा पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. मयंक, सहायक प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र थे। इस पाठ्यक्रम में मिजोरम राज्य के आइजोल जिले के विभिन्न विद्यालयों के 68 हिंदी शिक्षकों (45 महिला एवं 23 पुरुष) ने प्रतिभागिता की। नवीकरण पाठ्यक्रम का पंजीकरण दिनांक 05 मई 2025 को किया गया। पंजीकरण के उपरांत नवीकरण पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य प्रारंभ करने के पहले प्रतिभागियों के ज्ञान का आंकलन करने के लिए पूर्व-परीक्षण लिया गया।

दिनांक 17-05-2025 को समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सुरेंद्र दुबे संरक्षण के रूप में ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। केंद्रीय हिंदी संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। अध्यक्ष के रूप में नवीकरण पाठ्यक्रम संयोजक एवं शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. ललमुआनओमा साइलो, असिस्टेंट प्रोफेसर, मिज़ोरम हिंदी ट्रैनिंग कॉलेज, आइज़ोल, सम्मानीय अतिथि के रूप में डॉ. मरीना ललथ्लामुआनी, प्रधानाचार्य, मिज़ोरम हिंदी ट्रैनिंग कॉलेज, आइजोल उपस्थित थे। पाठ्यक्रम प्रभारी डॉ. मयंक तथा पाठ्यक्रम हेतु अतिथि अध्यापक डॉ. जुडी ललेंगवारी, सहायक प्रोफेसर, मिज़ोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय एवं श्री आकाश कुमार, हिंदी विभाग, नेहू शिलांग उपस्थित थे। साथ ही प्रतिभागी शिक्षकगण एवं मिज़ोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षक उपस्थित थे।प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने मंचासीन विद्वतजनों का स्वागत और सम्मान उत्तरीय एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा प्रकाशित शोध पत्रिका समन्वय पूर्वोत्तर की प्रति भेंट कर किया।

कार्यक्रम के संरक्षक प्रो. सुरेंद्र दुबे अपने उद्बोधन में प्रतिभागी शिक्षकों को हिंदी के शिक्षण एवं प्रचार-प्रसार के कार्य हेतु बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर और मिजोरम की सभी भाषाएँ सम्मानित और महत्वपूर्ण हैं। हिंदी के स्वरूप की चर्चा करते हुए प्रो. सुरेंद्र दुबे ने कहा कि हिंदी के माध्यम से भारत ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर जुड़ा जा सकता है। उन्होंने प्रतिभागियों को स्थानीय भाषाओं के लोक साहित्य, लोक गीत, लोक कथाओं आदि को देवनागरी लिपि के माध्यम से संकलित करने के लिए कहा। उन्होंने मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण महाविद्यालय को कार्यक्रम आयोजित करने हेतु आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपने उद्बोधन में प्रशिक्षणार्थियों को नियमित रूप से पूर्ण सामर्थ्य के साथ नवीकरण पाठ्यक्रम पूर्ण करने की बधाई दी। उन्होंने कहा कि शिक्षक को नित्य अपने ज्ञान को अद्यतन करना करना चाहिए।

शिक्षक की समाज मे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक की पहचान उसके कर्मों और व्यवहार से होती है और वह अपने छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत होता है। शिक्षक को अपनी छवि का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप से जुड़े शिलांग केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने नवीकरण पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूर्ण करने के लिए प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने प्रतिभागियों को नवीकरण पाठ्यक्रम में प्राप्त ज्ञान को अपने अध्यापन कार्य में उपयोग करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि सीखना एक निरंतर प्रक्रिया है और शिक्षकों को हमेशा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने प्रतिभागियों को शिलांग केंद्र की गतिविधियों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया और कहा कि शिलांग केंद्र मिजोरम और पूर्वोत्तर में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु सदैव प्रयासरत है।

सम्मानीय अतिथि डॉ. मरीना ललथ्लामुआनी ने प्रतिभागियों को मिजोरम में हिंदी के प्रचार-प्रसार और शिक्षण का दायित्व पूर्ण सामर्थ्य के साथ करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि हिंदी शिक्षण को केवल जीविका का साधन न समझें बल्कि एक मिशन के रूप में मिजोरम में हिंदी के विकास और सुधार हेतु कार्य करें। उन्होंने कहा इस वर्ष मिजोरम हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की स्वर्ण जयंती आयोजित की जाएगी जिसमें सभी प्रतिभागियों को आमंत्रित किया।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ललमुआनओमा साइलो प्रतिभगियों से प्राप्त ज्ञान का सदुपयोग करने और उसे अपने विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए कहा। उन्होंने प्रतिभागियों को निरंतर अपना ज्ञान और कौशल का विकास करना चाहिए। अतिथि अध्यापक डॉ. जुडी ललेंगवारी ने ज्ञान का बीज पूरे मिजोरम में रोपने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शिलांग केंद्र को सफल पाठ्यक्रम आयोजन करने हेतु धन्यवाद दिया। ❑

मैसूर केंद्र

मैसूर केंद्र का संदर्शन

दिनांक 05.05.2025 को गीता शिशु शिक्षण संघ, सिम्हा सुब्बा महालक्ष्मी फस्ट ग्रेड कालेज, मैसूर की हिंदी विभाग की शिक्षिका श्रीमती अकांक्षा एवं संत जोसेफ महिला कॉलेज, रमनहल्ली, मैसुरु की हिंदी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. शोभा डी. के नेतृत्व में कुल 31 विद्यार्थियों के समूह ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र के संदर्शन किया। इस दौरान संदर्शन पर आए विद्यार्थियों ने हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल करने के साथ-साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति के बारे में भी खुलकर आपस में चर्चा की।

केंद्र के प्रशासनिक कर्मी श्री राघवेंद्र एवं पुस्तकालय लिपिक श्री लक्ष्मीनारायण गुप्ता ने विद्यार्थियों को केंद्र के पुस्तकालय का दर्शन कराया एवं पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों एवं केंद्र पर संचालित कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। इस कार्य में केंद्र के अन्य कर्मी श्रीमती पद्मा, रियानाएवं चेन्ने गोडा आदि ने सहयोग किया।

हिंदी भाषा एवं रोजगार विषय पर कार्यशाला का आयोजन

क्षेत्रीय निदेशक, मैसूर केंद्र के संयोजन में केंद्र के संदर्शन के लिए आए हुए विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा एवं रोजगार विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में केंद्र के शैक्षिक सदस्य डॉ. योगेंद्र मिश्र द्वारा हिंदी भाषा की शब्द संपदा पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इस व्याख्यान के अंतर्गत उन्होंने हिंदी शब्द एवं उसकी अर्थ व्यापकता के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी। इस अवसर पर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, डॉ. रणजीत भारती ने विद्यार्थियों को हिंदी में रोजगार के बारे में हिंदी के तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता को उजागर करते हुए हिंदी में सक्षम ए.आई. टूल की प्रायोगिक जानकारी दी। लगभग दो घंटे के इस कार्यशाला के दौरान सर्वप्रथम विद्यार्थियों को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं मैसूर केंद्र के बारे में जानकारी दी गई। उसके बाद हिंदी में काम करने की संभावना एवं आवश्यकताओं के बारे में जानकारी दी गई। हिंदी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में शामिल होने के बावजूद भी इंटरनेट पर कंटेंट निर्माण में 34वें स्थान पर है। अतः इस दिशा में हिंदी भाषा में काम करने के लिए अपार रोजगार की संभावनाएँ है। रोजगार के लिए हिंदी भाषा में काम करने के लिए हिंदी भाषा एवं तकनीकी ज्ञान की महत्ता को बताते हुए कुछ तकनीकी ए. आई. टूल्स जैसे, को पायलट, गूगल जेमिनाई, नैपकिन ए. आई., इंविडियो ए. आई. की प्रायोगिक जानकारी दी गई। इन सभी ए. आई. टूल्स को विद्यार्थियों ने अपने मोबाइल प्रैक्टिकल प्रयोग करके सीखा और भविष्य में इस प्रकार की अन्य कार्यशाला में सहभागिता हेतु जिज्ञासा व्यक्त की। इस अवसर पर जी एस.एस.एस.कालेज, मैसुरू की हिंदी विभाग की शिक्षिका श्रीमती आकांक्षा एवं संत जोसेफ महिला कॉलेज, रमनहल्ली, मैसुरु की हिंदी विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. शोभा डी. ने भी अपने-अपने विचार साझा किए। इस कार्यशाला के आयोजन में प्रशासनिक कर्मी श्री राघवेंद्र का विशेष सहयोग रहा इसके अलावा श्री लक्ष्मीनारायण, पद्मा, रियाना, स्वामी, चेन्ने गोडा आदि उपस्थित रहे। ❑

गुवाहाटी केंद्र

संचेतना शिविर में मौलिक लेखन पर जोर

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के गुवाहाटी केंद्र द्वारा मुख्यालय की स्वीकृति से जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट), नामची, सिक्किम के डी.एल.एड. दवितीय सत्र के छात्रों के लिए दिनांक 13.05.2025 से 23.05.2025 तक डाइट, नामची (सिक्किम) में हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। इस पाठ्यक्रम का संयोजन डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, गुवाहाटी केंद्र द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम में डॉ. चंद्रशेखर चौबे के अतिरिक्त रिसोर्स पर्सन के रूप में श्री शिवम कुमार, शोधार्थी, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक तथा श्री भानुभक्त बस्नेत, शोधार्थी, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक ने अध्यापन कार्य किया।

इस पाठ्यक्रम का उद्घाटन समारोह दिनांक 13.05.2025 को पूर्वाह्न 11.30 बजे डाइट, नामची (सिक्किम) के सभागार में आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र का आरम्भ प्रतिभागी छात्रों द्वारा प्रार्थना तथा स्वागत गान के साथ किया गया। इस उद्घाटन समारोह में आदरणीय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में सादर उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष आदरणीय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने ऑनलाइन माध्यम से छात्रों को संबोधित किया। आपने हिंदीतर भाषी राज्यों में हिंदी के प्रचार-प्रसार में केंद्रीय हिंदी संस्थान की भूमिका से सभी को अवगत कराते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु इस प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन की आवश्यकता एवं हिंदी के वैश्विक महत्व को रेखांकित किया। आपने अपने वक्तव्य में प्रतिभागी छार्त्रो को हिंदी विषय में उच्च शिक्षा के साथ-साथ सृजनात्मक एवं मौलिक लेखन के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती वंदना छेत्री, प्राचार्य, डाइट, नामची (सिक्किम) ने डॉ. चंद्रशेखर चौबे सहित सभी रिसोर्स पर्सन को डाइट का प्रतीक अंगरखा भेंट कर स्वागत करते हुए उद्बोधन वक्तव्य दिया। आपने प्रशिक्षणार्थियों के लिए हिंदी भाषा के महत्त्व एवं उपयोगिता को बतलाते हुए सभी छात्रों को नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहकर हिंदी शिक्षण-प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के माध्यम से हिंदी सीखने का आहवान किया। तत्पश्चात डॉ. चंद्रशेखर चौबे, क्षेत्रीय निदेशक, गुवाहाटी केंद्र ने हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम का परिचय प्रस्तुत किया एवं पाठ्यक्रम की उपादेयता पर विस्तार से प्राकश डाला। पाठ्यक्रम के रिसोर्स पर्सन श्री शिवम कुमार ने छात्रों को संबोधित करते हुए सिक्किम राज्य में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता की चर्चा करते हुए हिंदी की आवश्यकता एवं महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। रिसोर्स पर्सन श्री भानुभक्त बस्तेनत ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी अध्यापकों एवं छात्र-छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

पाठ्यक्रम के प्रथम दिन नामांकन के साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों के व्यावहारिक भाषायी ज्ञान को जानने के उद्देश्य से पूर्व परीक्षण लिया गया। इस पाठ्यक्रम में 48 छात्रों ने नामांकन लिया, जिनमें 15 (पंद्रह) छात्र एवं 33 (तैंतीस) छात्राएँ सम्मिलित थीं। सभी छात्र-छात्राओं ने नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहकर पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक पूरा किया। पाठ्यक्रम में डॉ. चंद्रशेखर चौबे ने शैक्षिक अध्ययन तथा भारतीय ज्ञान परम्परा, श्री शिवम कुमार ने व्यावहारिक हिंदी संरचना तथा हिंदी भाषा परिमार्जन एवं श्री भानुभक्त बस्तेनत ने मानक हिंदी लेखन एवं प्रयोग तथा हिंदी भाषा परिमार्जन से संबंधित नियमित कक्षाएँ ली और प्रतिभागियों को प्रशिक्षित करने का हर संभव प्रयास किया। प्रतिभागियों ने भी इस पाठ्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने में सहयोग प्रदान किया। पाठ्यक्रम

कौशल प्रबंधन से होगा विद्यार्थियों का चहुँमुखी विकास : निदेशक

दिनाँक 03.05.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र द्वारा श्रीमती विरम्मा गंगसिरी महिला महाविद्यालय कलबुरगी कर्नाटक के विद्यार्थियों हेतु आयोजित 12 दिवसीय द्वीतीय हिंदी भाषा संचेतना शिविरके समापन के दिन प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, माननीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया। इस व्याख्यान का आयोजन आभाषी पटल द्वारा आयोजित किया गया। व्याख्यान का विषय 'कौशल विकास एवं प्रबंधन' था। अपने व्याख्यान के दौरान प्रो. कुळकर्णी जी ने विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित करते हुए उनके द्वारा संचेतना शिविर में हिंदी के बारे में प्राप्त जानकारी के बारे में चर्चा की। ❑

पत्रिका का विमोचन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, मैसूर केंद्र द्वारा श्रीमती विरम्मा गंगसिरी महिला महाविद्यालय कलबुरगी कर्नाटक के विद्यार्थियों हेतु आयोजित 12 दिवसीय द्वीतीय हिंदी भाषा संचेतना शिविर के समापन समारोह के अंतर्गत प्रतिभागी विद्यार्थियों द्वारा तैयार हस्तलिखित पत्रिका 'कलबुरगी परिचायिका'का विमोचन किया गया। ❑

152वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र-भुवनेश्वर द्वारा ओड़िशा राज्य के खोरधा जिले के अंतर्गत सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के हिंदी शिक्षकों के लिए दि. 19.05.2025 से 30.05.2025 तक 152 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, विशिआपड़ा, तिरिमल, जटनी, जिता खोरधा में आयोजित किया गया। इसमें कुल 81 (35 महिला व 27 पुरूष) प्रतिभागी सम्मिलित हुए। नवीकरण कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी संस्थान, भुवनेश्वर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। उपरोक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित श्री गोराचान्द राय (प्रधानाचार्य, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर विशिआपड़ा, खोरधा), डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता केंद्रीय हिंदी संस्थान, भुवनेश्वर केंद्र) एवं खोरधा जिले के अंतर्गत सरस्वती शिशु विद्या मंदिर के हिंदी शिक्षक उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने अपने उद्बोधन में पाठ्यक्रम व संस्थान का परिचय देते हुए अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की एवं हिंदी भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सरस्वती शिशु विद्या मंदिर खोरधा जिले के हिंदी शिक्षकों ने नवीकरण के आयोजन हेतु संस्थान का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया।

दिनांक 30.05.2025 को आयोजित नवीकरण कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। मुख्य अतिथि एवं विशेष व्याख्यान हेतु आमंत्रित श्री नलिनीकांत पंडा (सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, खोधर्धा जिला संकुल प्रमुख शिक्षा विकास समिति (विद्या भारती), ओडिशा, डॉ. अरविन्द

तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, केंद्रीय हिंदी संस्थान, भुवनेश्वर केंद्र), डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ) एवं श्री गोराचान्द राय (प्रधानाचार्य, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, विशिआपड़ा खोर समापन समारोह में उपस्थित रहे। नवीकरण कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने नवीकरण से संबंधित अपने अनुभवों को व्यक्त किया। इस 12 दिवसीय नवीकरण कार्यक्रम में अध्यापन कार्य डॉ. रंजन कुमार दास (क्षे.नि.), डॉ. चंद्रप्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ) तथा डॉ अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता) द्वारा किया गया। मंच संचालन प्रतिभागी हिंदी शिक्षकों द्वारा किया गया। इस नवीकरण में विवेकानंद विश्वकर्मा (लिपिक, पिक अनु तथा संतोष कुमार रणा. MTS (अनु) द्वारा प्रतिभागियों के लिए पंजीकरण फॉर्म, प्रमाण-पत्र एवं निवृत्ति प्रमाण-पत्र, TA/DA फॉर्म, पुस्तकों की बिक्री तथा अल्पाहार की व्यवस्था की गई। ❑

पृष्ठ 6 का शेष...

पूरा होने के बाद प्रशिक्षणार्थियों का पर परीक्षण लिया गया।

दिनांक 23.05.2025 को हिंदी भाषा संचेतना शिविर पाठ्यक्रम का समापन समारोह पूर्वाह्न 11.15 बजे से आयोजित किया गया। इस समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती वंदना छेत्री, प्राचार्य, डाइट, नामची (सिक्किम) की सादर उपस्थित रही। कार्यक्रम का संचालन प्रतिभागी छात्र मनीषा राय द्वारा सुंदर ढंग से किया गया। सर्वप्रथम छात्रों ने मधुर स्वर में स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात प्राचार्य महोदया श्रीमती वंदना छेत्री, डाइट, नामची ने पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य करने वाले अध्यापकों डॉ. चन्द्रशेखर चौबे, श्री शिवम कुमार एवं श्री भानुभक्त बस्नेत का स्वागत पुष्पगुच्छ, अंगरखा एवं उपहार देकर किया। आपने अपने स्वागत संबोधन में डाइट नामची के छात्रों को हिंदी प्रशिक्षण हेतु हिंदी भाषा संचेतना शिविर आयोजित करने के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक महोदय एवं कुलसचिव महोदय तथा सभी अध्यापकों के प्रति आभार प्रकट किया। तत्पश्चात रिसोर्स पर्सन श्री शिवम कुमार ने कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित होकर मनोयोग से हिंदी सीखने के लिए डाइट नामची के छात्रों की सराहना की। इसके पश्चात प्रतिभागी पाँच छात्रों शीतल, शेरिंग, निकिता, दीक्षा एवं एलन ने पाठ्यक्रम के दौरान प्राप्त अपने अनुभवों को साझा करते हुए हिंदी भाषा संचेतना शिविर में मानक हिंदी भाषा, हिंदी व्याकरण, शिक्षण सिद्धांत, भाषा परिमार्जन एवं भारतीय ज्ञान पारम्परा से संबंधित कक्षाओं से प्राप्त जान-लाभ के लिए सभी अतिथि अध्यापकों के प्रति आभार प्रकट किया। प्रतिभागी छात्रों विशाल, अनिशा, मिलन, कालजंग और उनके साथियों ने कार्यक्रम में विविध सांस्कृतिक प्रस्तुति देते हुए मनमोहक ढंग से नेपाली नृत्य, हिंदी नृत्य, लेप्चा नृत्य एवं भूटिया नृत्य प्रस्तुत किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् नवीकरण के दौरान नियमित रूप से उपस्थित रहकर प्रशिक्षण पूरा करनेवाले 48 प्रतिभागी छात्रों के साथ-साथ पर परीक्षण में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करनेवाले प्रतिभागी छात्रों को क्षेत्रीय निदेशक एवं प्राचार्य महोदया के कर कमलों से प्रमाण पत्र एवं संस्थान प्रकाशन की पुस्तके उपहार के रूप में प्रदान की गई। प्रतिभागी छात्र संजीव ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया। ❑

अर्थांतर

'आवास' और 'निवास'

कोशों की गवाही के साथ मोटे तौर पर 'आवास' बराबर 'निवास' है, 'निवास' बराबर 'आवास' है, और 'वास' बराबर 'आवास' और 'निवास' दोनों है। इन तीनों का समान अर्थ 'रहना' भी लिखा मिलता है, पर भेद करने के लिए 'वास' (धातु 'वस्' माने 'बसना, रहना') 'रहना' के सब से निकट है।

'आवास' के उपसर्ग 'आ' (अर्थ 'सीमा, समेत, आदि') और 'निवास' के उपसर्ग नि' (अर्थ 'भीतर, आश्रय, आदि') के कारण इन शब्दों के अर्थ में कुछ-न-कुछ अंतर अवश्य होना चाहिए। 'आवास' वास-स्थल, निवास-स्थान, मकान, आदि के अर्थ में स्थिर होता जा रहा है। प्रयोग - 'छात्र का आवास 'छात्रावास' है; दूत का आवास 'दूतावास' है; आप का 'आवास' कहाँ है, निजी है या किराए का?' निवास' किसी स्थान को अपना घर बना कर वहाँ रहने-बसने की क्रिया या भाव के अर्थ में स्थिर होता जा रहा है। प्रयोग - 'छात्र छात्रावास में 'निवास' करता है; दूत दूतावास में 'निवास' करता है; आप कहाँ 'निवास' करते हैं?' ('आप कहाँ 'आवास' करते हैं' अमान्य प्रयोग होगा।)

'उसे आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई' उदाहरण से स्पष्ट है कि 'कारावास' (कारा या कारागार में वास की अवस्था) 'निवास' के निकट है, 'आवास' के नहीं।

'प्रवास' ('प्र' उपसर्ग का अर्थ 'अधिकता, आगे, आदि' है) बराबर 'यात्रा' है, 'देश-विदेश की यात्रा करना' है, 'वहाँ ठहर जाना या रहना' है। उदाहरण- 'डॉक्टर पराक्रम सिंह आजकल 'प्रवास' पर हैं।'

'अधिवास' ('अधि' उपसर्ग का अर्थ 'श्रेष्ठता, ऊपर, आदि' है) बराबर 'परदेश में बस जाना' है। उदाहरण- 'इंग्लैण्ड में लाखों भारतीय अधिवास कर रहे हैं। वे अधिवासी वहाँ के आवासों में स्थायी निवासी के रूप में रहते हैं।'

प्रस्तुति : अनिल तिवारी

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोट: 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।
2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationman-agerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKHSANA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

परिश्रम और साधना का फल है संत्रात समारोह

अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक प्रशिक्षार्थियों का संत्रात समारोह संपन्न

> ***"केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने संत्रात समारोह को दीक्षांत समारोह को संज्ञा दी तथा सभी शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों से शपथ पत्र का वाचन कराया तथा शपथ पत्र में उद्धृत बिन्दुओं को जीवन में उतारने की उन्हें प्रेरणा दी। प्रो. कुळकर्णी ने कहाकि यह संत्रात समारोह हमारे निरंतर परिश्रम और साधना का फल है। उन्होंने कहा कि इस साधना की सार्थकता तभी है जब हम सभी यहाँ सीखे हुए का भावी जीवन में सुंदर सदुपयोग करें।"***

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा शैक्षिक सत्र 2023-25 के शिक्षक प्रशिक्षार्थियों हेतु सत्रांत समारोह का आयोजन किया गया। निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में ब्रज प्रांत के प्रांत प्रचारक धर्मेंद्र जी ने हिस्सा लिया तथा अपने उद्बोधन में कहा कि केंद्रीय हिंदी संस्थान हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए संजीदगीं के साथ महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

संस्थान के अटल विहारी बाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में दिनांक 15 मई 2025 को आयोजित कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। तत्पश्चात सभी अतिथियों का स्वागत सत्कार उत्तरीय एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में अध्यापक शिक्षा विभाग के अध्यापक प्रो. चंदकांत कोठे ने स्वागत वक्तव्य देते हुए संस्थान का संक्षिप्त परिचय दिया। विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. तस्मीना हुसैन ने शैक्षणिक सत्र 2024-25 का विभागीय वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

संस्थान के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने संत्रात समारोह को दीक्षांत समारोह को संज्ञा दी तथा सभी शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों शपथ का वाचन कराते हुए उन्हें जीवन में उतारने की प्रेरणा दी। प्रो. कुळकर्णी ने कहा कि यह संत्रात समारोह हमारे निरंतर परिश्रम और साधना का फल है। उन्होंने कहा कि इस साधना की सार्थकता तभी है जब हम यहाँ सीखे हुए का भावी जीवन में सुंदर सदुपयोग करें।

प्रोफेसर कुळकर्णी ने कहा कि सत्रांत या दीक्षांत समारोह को अंग्रेजी में कन्वोकेशन भी कहा जाता है। यह एक शिक्षा संस्थान में पढ़ाई पूरी करने वाले छात्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण समारोह होता है, जिससे पढ़ाई के पूरा होने तथा जीवन के नए अध्याय के शुरू होने का संकेत मिलता है।सत्रांत नई शुरुआत का प्रतीक है जहाँ से विद्यार्थी अपने सपनों को साकार करने के लिए प्राप्त ज्ञान और कौशल का सदुपयोग करता है। पश्चिमी सभ्यता मेंइसका आशय केवल डिग्री प्राप्त करना होता है लेकिन भारत में डिग्री के साथ-साथ विद्यार्थियों को संस्कार भी प्राप्त होता है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संस्थान से शिक्षित प्रशिक्षित छात्र अपने भावी जीवन में अच्छे संस्कारों का परिचय देकर अपने परिवार समाज तथा राष्ट्र के जीवन में खुशहाली लाएँगे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि धर्मेन्द्र जी ने हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए संस्थान के प्रयासों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि संस्थान जिस समर्पण के साथ हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के उत्थान के लिए प्रयास कर रहा है उसकी सहज अनुभूति हो रही है। ब्रज प्रांत के प्रचारक ने यह भी जोड़ा कि भारतीय भाषाएँ हमारे देश की थाती हैं उन्होंने कहा कि सभी भाषाएँ नदियाँ है जबकि हिंदी महासागर की तरह है। हिंदी भाषा का निरन्तर विकास हो रहा है। दुनियाभर में हिंदी के प्रति लोगों को आकर्षण बढ़ा है व्यवसायिक दृष्टि से भी दुनिया के लोग हिंदी सीखने के लिए आतुर है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मंडल के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में सबसे पहले भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संस्थान को विशिष्ट मानद विश्वविद्यालय का दर्जा दिए जाने पर सभी को शुभकामनाएँ दी।

प्रो. दुबे ने विद्यार्थियों द्वारा दर्ज कराई गई प्रतिक्रियाओं का जिक्र करते हुए उनकी हौसला आफजाई की तथा उन्हें यह टास्क दिया कि सभी विद्यार्थी अपनी-अपनी लोककथाओं, कहावतों लोक में प्रचलित कहानियों गीतों आदि को देवनागरी लिपि में लिखकर विभाग को प्रेषित करें।

शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष ने कहा कि हिंदी भाषा का वैश्विक परिदृश्य अत्यंत आशावादी और गतिशील है। हिंदी आज न केवल भारत में एक बढ़ती हुई भाषा है बल्कि विश्व के कई देशों में बोलचाल में भी प्रयुक्त हो रही है। हिंदी आज एक प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में पहचान प्राप्त कर चुकी है और यह विश्व व्यापार और संवाद में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

ज्ञात हो कि कार्यक्रम के दौरान शिक्षण प्रशिक्षणर्थियों प्रतिक्रिया के अंतर्गत प्रियंका बोरा, श्रवण कुमार, दीक्षिता चौधरी, सहबाज कुरैशी, एनवातिएन्ला, प्रीति कुमारी, मागुसिर पाणिग्राही, प्रियदर्शिनी, परमपूई, किरण साहू, उदय साहू एवं टिनुबपांग ने अपने-अपने अनुभव साझा किए। कार्यक्रम के बीच में मंचस्थ अतिथियों द्वारा 'समन्वयक' पत्रिका का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान मंचस्थ अतिथियों द्वारा विभागीय प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उत्तरीय से उनका सम्मान किया गया। समारोह में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा एकल नृत्य, युगल नृत्य, समूह नृत्य, एकल गान, काव्य अभिव्यक्ति आदि रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं एवं कनिष्ठ वर्ग द्वारा वरिष्ठ वर्ग के लिए भाव अभिव्यक्ति पर वृत्त चित्र का प्रदर्शन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन अध्यापक शिक्षा विभाग की डॉ. प्रणीता मिश्रा, सहायक आचार्य एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सरोज राय सहआचार्य ने किया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. राजश्री, सहायक आचार्य द्वारा वंदेमातरम का गायन किया गया। ❑

संरक्षक प्रो. सुरेन्द्र दुबे	संपादक डॉ. अपर्णा सारस्वत	टाइप सेटिंग योगेन्द्र सिंह राणा
प्रधान संपादक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी	संपादन सहयोग अनिल तिवारी	मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेल: sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।